

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by ipca | Foundation

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 6

चिकित्सा का चक्कर

बेढब बनारसी

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



बेढब बनारसी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

बेढब बनारसी (1895 -1968)



असली नामः कृष्णदेव प्रसाद गौड़

जन्मः 11 नवम्बर 1895, वाराणसी

मृत्युः 6 मई 1968

पहचानः हिन्दी साहित्य की हँसौड़ परम्परा के प्रमुख हास्य-व्यंग्यकार ।

लेखन का लक्ष्यः सरकारी व्यवस्था, सामाजिक परम्पराओं व व्यवसायों पर व्यंग्यवाण ।

भाषा-शैलीः सरल, सहज, मुहावरेदार।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मुख्य काव्य रचनाएँ: बेढब की बहक, काव्य कमल, बिजली, बेढब की वाणी, नया जमाना आदि ।

प्रमुख कहानियाँः बनारसी एक्का, मसूरीवाला, गांधी का भूत, टनाटन, धन्यवाद आदि ।

उपन्यासः लेफ्टिनेंट पिगसन की डायरी

सम्पादन कार्यः नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आँधी, प्रसाद, खुदा की राह पर, तरंग आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

निबंधः हुक्कापानी, उपहार, ग़ालिब की कविता, रूहे सुखून आदि।

विशेषताः भाषा में अरबी एवं अंग्रेजी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग, जिससे रचनाएँ मनोरंजक व प्रभावशाली बनती हैं।

चिकित्सा का चक्कर पाठ में बनारसी जी ने अपने देश में प्रचलित लगभग सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों से चिकित्सा करने वाले चिकित्सकों, वैद्य-हकीमों तथा ओझाओं पर अच्छा-खासा व्यंग्य किया है। इसके अतिरिक्त लेखक के मित्रों एवं सगे-संबंधियों के सलाह-नुस्खों के साथ-साथ चिकित्सकों एवं वैद्य-हकीमों के हाव-भाव तथा पोशाकों पर भी कटाक्ष किया है। लेखक के बीमार पड़ने पर उनके मित्र, पड़ोसी एवं सगे-संबंधी उन्हें देखने आते हैं। जो आता है कोई न कोई नुस्खा

अपने साथ ले आता है, पर लेखक को आराम महसूस नहीं होता है। डॉक्टर, वैद्य, हकीम, ओझा सभी बुलाये जाते हैं। बीमारी से छुटकारा पाने के लिए तरह-तरह के इलाज शुरू होते हैं। कोई साधारण तो कोई गंभीर बीमारी बताकर लेखक की परेशानी को और बढ़ा देता है। कोई चुड़ैल अथवा ऊपरी हवा का प्रकोप बताकर ऊटपटांग टोटके करने की सलाह देता है तो कोई पाइरिया बताकर लेखक के सारे दाँत तुड़वा (उखड़वा) देने की सलाह देता है। इलाज के चक्कर में लेखक

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अत्यंत दुर्बल हो जाते हैं। सैकड़ों रुपये खर्च करने पर भी उनकी बीमारी दूर नहीं होती है। अंत में अपनी पत्नी की सलाह पर लेखक निश्चिंत होकर ढंग से खाना खाने लगते हैं और पंद्रह दिनों में पूरी तरह तंदुरुस्त हो जाते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मैं बिल्कुल हट्टा-कट्टा आदमी हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। मेरी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखता था, तो मुझे बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। यह तो न था कि मेरे बीमार होने पर भी दिन में दो बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे बीमार पड़ने पर हंटले बिस्कुट - जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते, दवा की बात और है खाने को मिलते।

बुलेटिन – বাতৰি প্রকাশ হোৱা

यू. डी. क्लोन की शीशियाँ सिर पर कोमल -करों से बीबी उड़ेलकर मलती और सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण करके पूछते, कहिए, बेढबजी, कैसी तबीयत है? किसकी दवा हो रही है ? कुछ फायदा है? जब कोई इस प्रकार से रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता, तब मुझे बड़ा मजा आता और उस समय मैं आनंद की सीमा के उस पार पहुंच जाता।

हाँ, तो एक दिन मैं हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को ही भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेण्ट जरा ज्यादा खा गया था, इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल में मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा, "विशेष न सही साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था।

रिफ्रेशमेण्ट – লঘু আহাৰ, জলপান

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

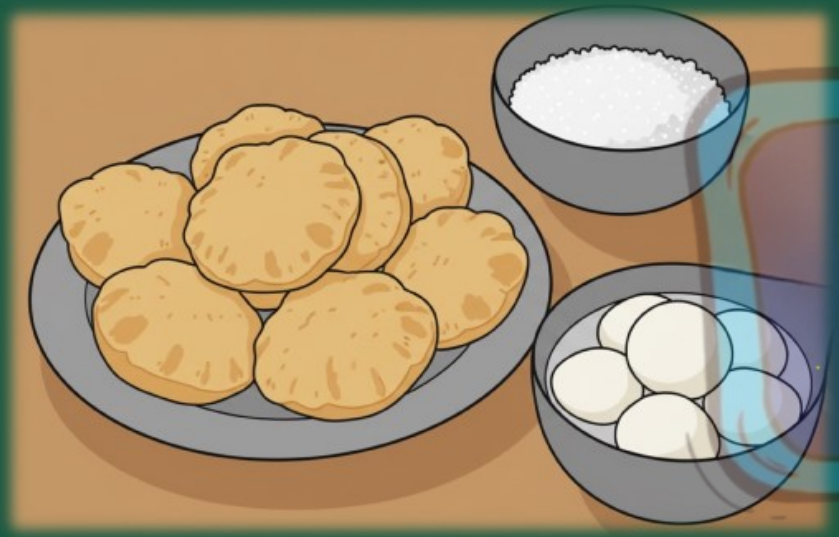

संभव है, मेरे आने में देर हो।" मैंने फिर इनकार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज वाली आध पाव मलाई। खा चुकने के बाद पता चला कि 'प्रसाद' जी के यहाँ से बाग बाजार का रसगुल्ला आया है। रस तो होगा ही। कल तक संभव है, कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगल कर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।

सूक्ष्म – অতি সৰু স্থূল – ডাঙৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

एकाएक तीन बजे रात को नींद खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सूइयाँ लेकर कोंच रहा है। परन्तु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण, अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैंने तुरन्त उसकी कुछ बूँदें पान कीं। दोबारा दवा पी। तिबारा। "पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा" की सार्थकता उसी समय मुझे मालूम हुई।

रामबाण – अति प्रभावशाली उपाय

प्रातःकाल होते-होते शीशी समाप्त हो गई। दर्द में किसी प्रकार कमी न हुई। प्रातःकाल एक डाक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।

डाक्टर साहब सरकारी अस्पताल के थे। वे एक इक्के पर तशरीफ लाए। सूट तो वे ऐसा पहने हुए थे कि मालूम पड़ता था, प्रिंस ऑफ वेल्स के बैलेटों में हैं। ऐसे सूटवाले का इक्के पर आना वैसा ही मालूम हुआ, जैसा लीडरों का मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कहने पाया था कि आप बोले, 'जुबान दिखलाइए'।

इक्का – घोड़ा गाड़ी



प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँख देखने में आता है, शायद वैसा ही डाक्टरों को मरीजों की जीभ देखने में आता है। डाक्टर महोदय मुस्कुराए। बोले, 'घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो खुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे हिन्दुस्तान से सोना गायब हो रहा है।' मैं तो दर्द से बेचैन था। डाक्टर साहब साहित्य का मजा लूट रहे थे। चलते चलते बोले, 'अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मँगानी न पड़ती।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

खैर, चंद्रकला फार्मेसी से दवा मँगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताजी मिलती हैं। बोतल में पानी गरम करके सेंकिएगा।' दवा पी गई। गरम बोतलों से सेंक भी आरंभ हुई। सेंकते-सेंकते छाले पड़ गए, पर दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुआ, शाम हुई, पर दर्द ने मुझसे ऐसा प्रेम दिखलाया कि हटने का नाम दूर। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा।

मूल्यांकन



1 लेखक को किस प्रकार का दर्द महसूस हो रहा था?

क जलन जैसा

ख बड़ी-बड़ी सूइयाँ कोंच रही हों ऐसा

ग दबाव जैसा

मूल्यांकन



2 "रामबाण" का अर्थ क्या है?

क साधारण उपाय

ख अति प्रभावशाली उपाय

ग कमजोर इलाज

मूल्यांकन



3 अमृतधारा को लेखक ने किस उपमा से संबोधित किया?

क रोगों का शत्रु

ख औषधियों का राजा

ग जादुई दवा